ऊँट चला करने सैर

ऊँट चला
करने सैर

जंगल में अँधेरा था और सब कुछ शांत था. कोई भी जीव हिल-डुल नहीं रहा था. हवा भी रुक सी गई थी. एक पत्ता भी कहीं गिर न रहा था, घास का एक तिनका भी कहीं हिल न रहा था.

और क्या तुम जानते हो कि ऐसा क्यों था? क्योंकि यह दिन और रात के बीच का समय था, वह समय जब रात समाप्त हो रही थी और दिन बस निकलने ही वाला था.

जंगल में रात बहुत अंधकारमय होती है और धीरे-धीरे बीतती है.

जिस समय यह कहानी शुरू होती है उस समय जंगल में अभी भी बहुत अँधेरा था. और गर्मी भी बहुत थी.

सब जीव शांत थे. लेकिन सबसे अधिक शांत था बाघ.

जंगल के बीच से गुज़रते रास्ते के किनारे लगे एक पेड़ के नीचे बाघ लेटा हुआ था. बाघ को देख पाना असंभव था, क्योंकि वह पत्तों, फूलों, बेलों और घास के पीछे छिपा हुआ था. अँधेरे ने भी उसे छिपा रखा था.

अचानक प्रकाश की पहली किरण आकाश में लहराई. आकाश और जंगल और यहाँ तक कि हवा भी प्रकाशित होने लगी.

तभी उस रास्ते पर, जो जंगल को दो भागों में बांटता था, दूर, बहुत दूर क्षितिज के पास, जहां धरती और आकाश मिलते हैं वहां कोई, हाँ कोई चल रहा था

अब बाघ शायद सो रहा था. लेकिन अगर तुम उसके चेहरे को देख पाते तो तुम देखते कि उसकी एक आँख, वह आँख जो उस ओर थी जिस ओर कोई चल रहा था, थोड़ी-सी, बहुत ही थोड़ी-सी खुली हुई थी.

और जब किसी बाघ की एक आँख बहुत थोड़ी-सी खुली होती है तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि वह सो नहीं रहा होता, जैसा कि वह दिखला रहा होता है.

लेकिन-वह देख और सोच रहा होता है.

अब वह वस्तु जो चल रही थी और जिसे बाघ देख रहा था, वह धीरे-धीरे निकट आ रही थी. आकाश नीला, और नीला, होता जा रहा था. रास्ते पर फैला प्रकाश भी बढ़ रहा था और तुम देख सकते थे कि वह वस्तु थी

तुम्हें आश्चर्य होगा!

एक बहुत सुंदर ऊँट.

एक बहुत सुंदर ऊँट, जिसकी आँखें हल्के भूरे रंग की थीं, बस सुबह की सैर कर रहा था. वह चल रहा था, सिर ऊँचा किये हुए, धीरे, बहुत धीरे से और बहुत आकर्षक ढंग से. सुबह की सुगन्धित हवा का वह आनंद ले रहा था और आकाश में फैलती लालिमा को भी वह निहार रहा था.

और पेड़ के नीचे लेटा हुआ बाघ कुछ सोच रहा था. "जैसे ही यह सुंदर ऊँट उस जगह पहुंचेगा जहां से पेड़ की छाया शुरू होती है – मैं उस पर झपट पड़ूँगा!"
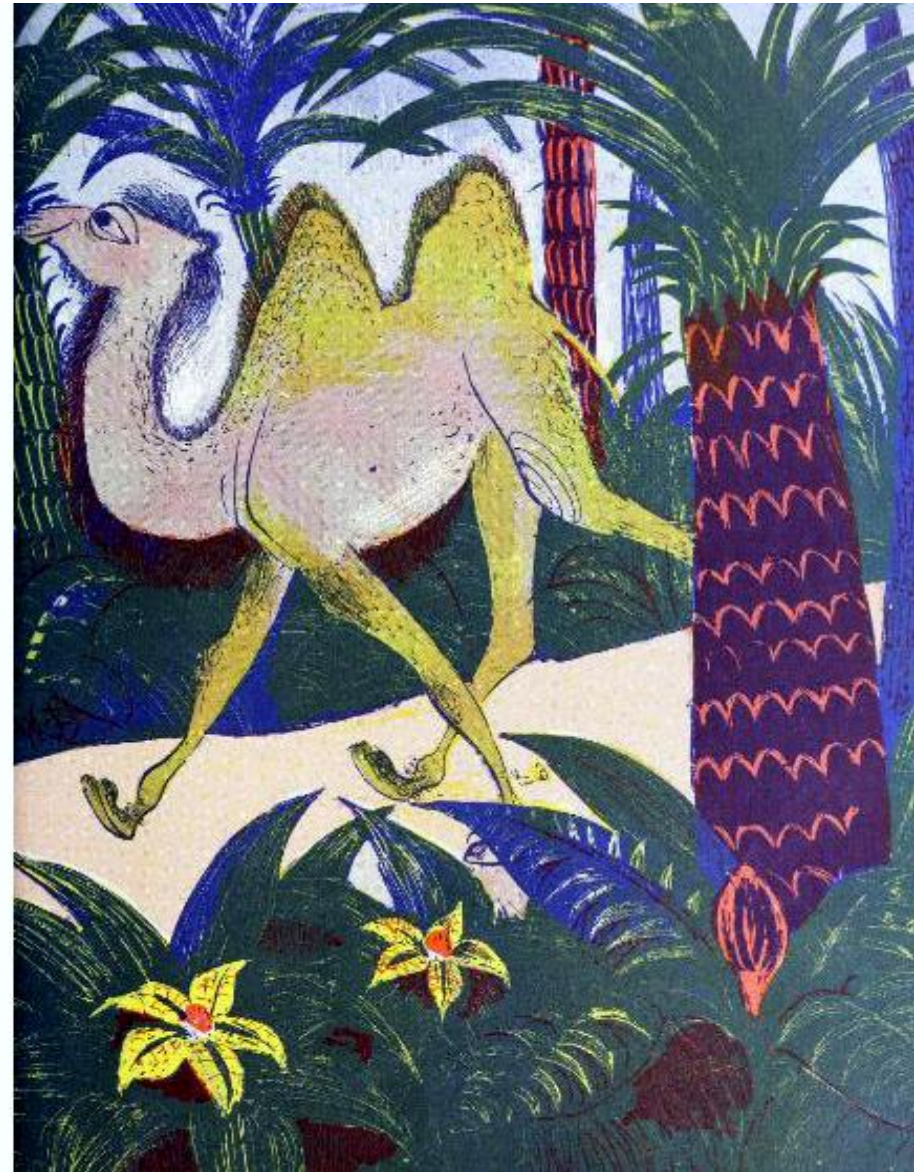
लेकिन उस रास्ते पर धीरे-धीरे आते ऊँट को देखने वाला अकेला बाघ ही नहीं था.

उस पेड़ पर, उस बाघ के ठीक ऊपर, एक ऊंचीं डाल पर एक बन्दर बैठा था! और वह जानता था कि बाघ क्या सोच रहा था! और इसलिये उसने बिना आवाज़ किये एक नारियल पकड़ कर तोड़ लिया. और उसने अपने आप से कहा, "जैसे ही बाघ ऊँट पर झपटने वाला होगा - यह नारियल में उसके सिर पर गिरा दूंगा!"
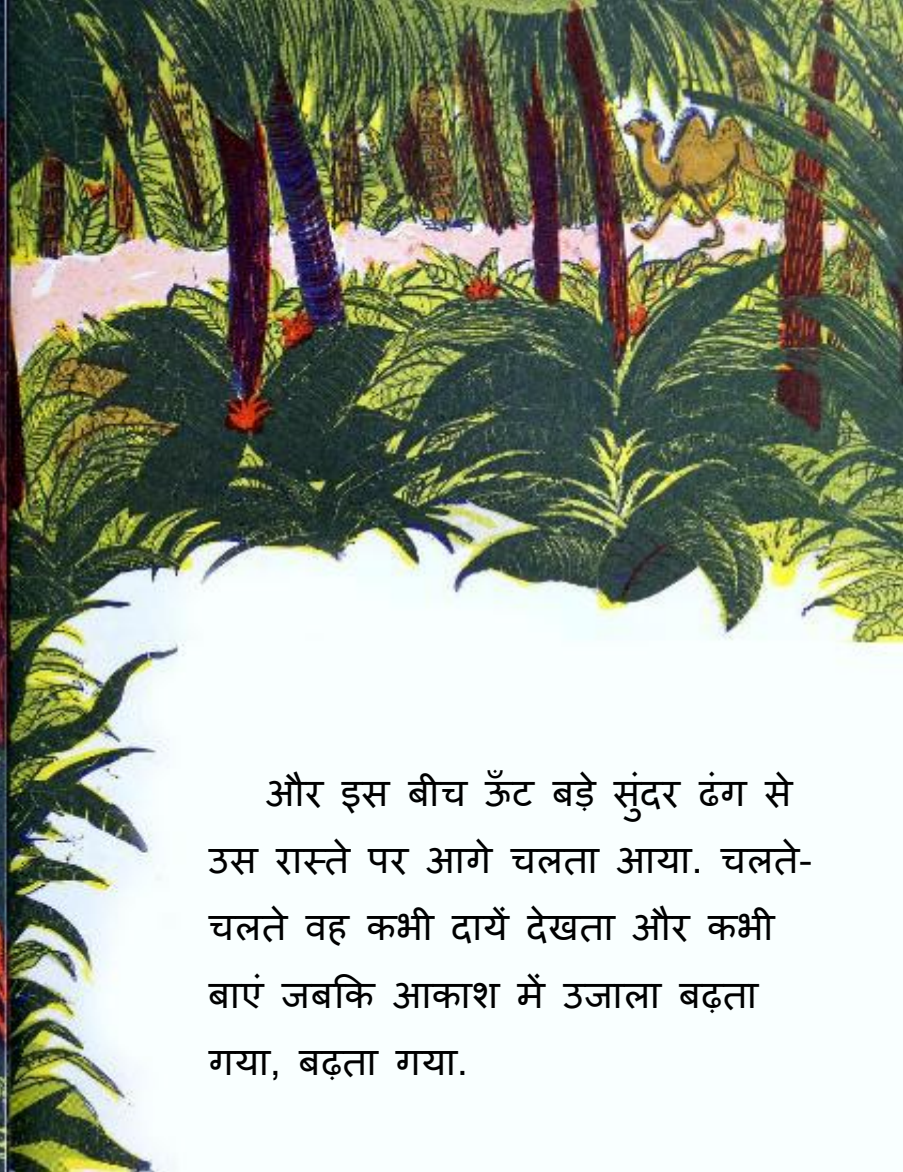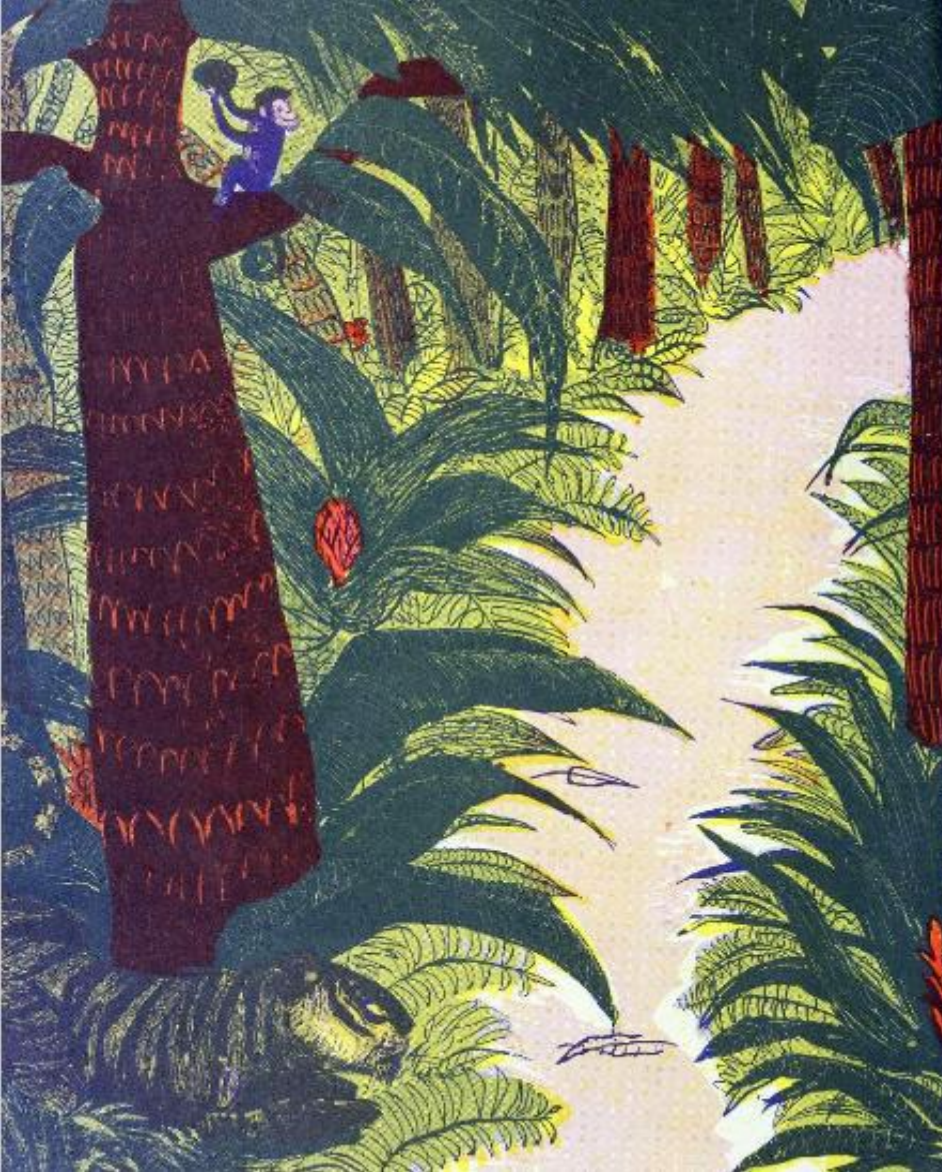
और इस बीच ऊँट बड़े सुंदर ढंग से उस रास्ते पर आगे चलता आया. चलते-चलते वह कभी दायें देखता और कभी बाएं जबकि आकाश में उजाला बढ़ता गया, बढ़ता गया.

लेकिन उस सुंदर ऊँट को देखने वाले सिर्फ बाघ और बंदर ही न थे.

उसी पेड़ पर एक छोटी गिलहरी बैठी थी और उसने अपनी छोटी, चमकीली आँखों से सब देख लिया था. और बिना आवाज़ किये छोटी गिलहरी बंदर के पीछे उसकी पूंछ के पास आ गयी. और छोटी गिलहरी ने अपने आप से कहा, "जैसे ही बन्दर बाघ के ऊपर नारियल गिराने वाला होगा - मैं उसकी पूंछ काट लूंगी!"
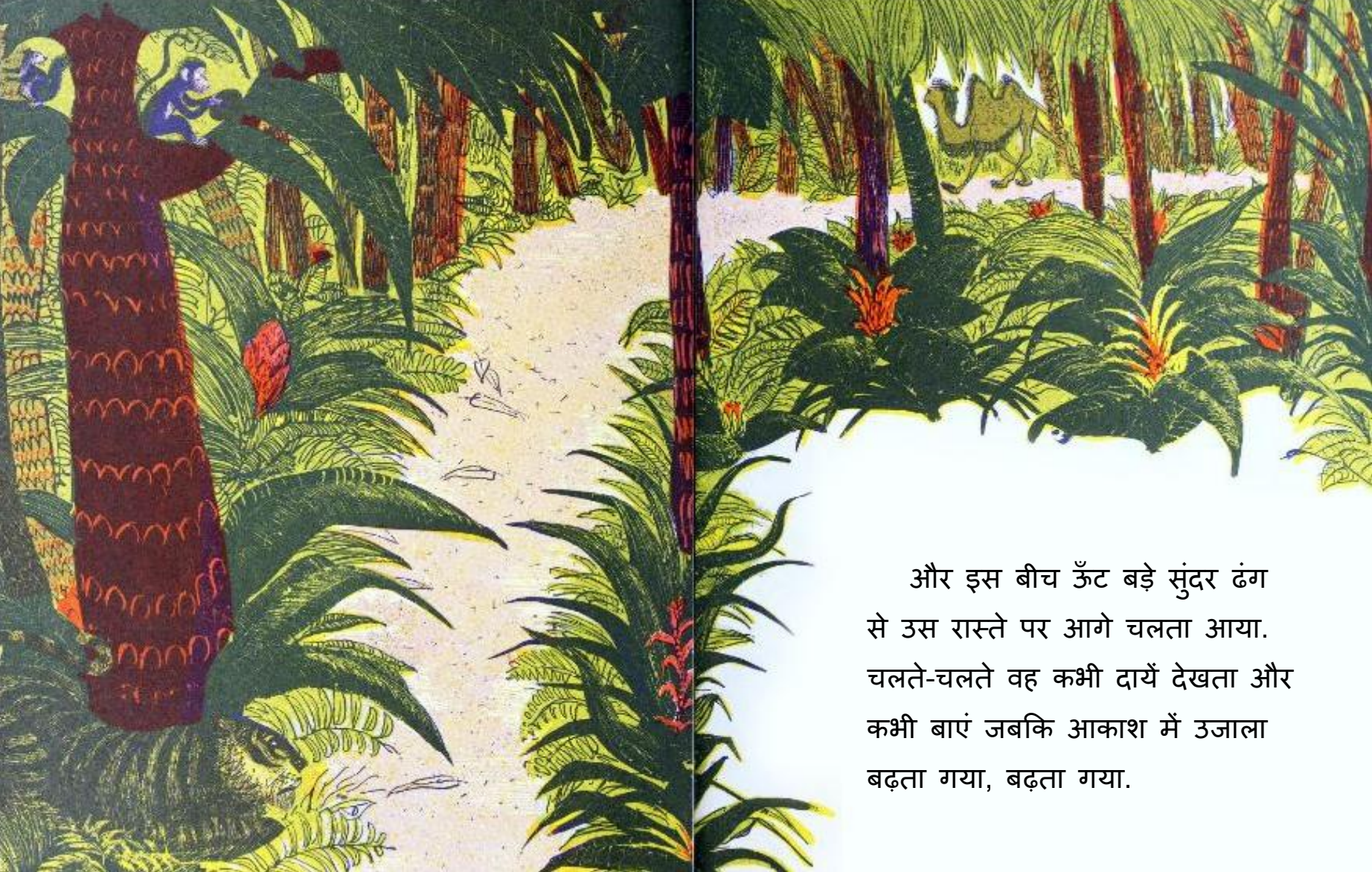
और इस बीच ऊँट बड़े सुंदर ढंग से उस रास्ते पर आगे चलता आया. चलते-चलते वह कभी दायें देखता और कभी बाएं जबकि आकाश में उजाला बढ़ता गया, बढ़ता गया.

लेकिन उस सुंदर ऊँट को देखने वाले सिर्फ बाघ, बंदर और गिलहरी ही न थे.

एक छोटा पक्षी देख रहा था कि बाघ, बंदर और गिलहरी क्या करने का सोच रहे थे. और छोटे पक्षी ने अपने आप से कहा, “अहा! मैं जानता हूँ कि मैं क्या करूंगा. जैसे ही गिलहरी बंदर की पूंछ काटने वाली होगी मैं अपने नुकीले पंजों से उसके नन्हे सिर पर हमला करूंगा.”

और अब बाघ इतना उत्तेजित हो गया था कि वह अपनी पूँछ को स्थिर रखना भी भूल गया. वह अपनी पूंछ को एक ओर से दूसरी ओर, इधर-उधर हिलाने लगा.

और इस बीच ऊँट निकट आ रहा था, और निकट आ रहा था. और सूर्य तपने लगा था, और तपने लगा था. और ऊँट को गर्मी लगने लगी थी, और गर्मी लगने लगी थी. और जैसे ही ऊँट पेड़ की छाया के निकट पहुँचने ही वाला था और बाघ और बंदर और अन्य सब तैयार हो रहे थे--------

ऊँट अचानक रुक गया और उसने अपनी सुंदर गर्दन को आकाश की ओर तान दिया. उसने अपना मुंह खोला-ओह, इतना बड़ा मुंह, और उसने एक ज़ोर की जम्हाई ली और अपनी मीठी और साधारण से आवाज़ में कहा, “सोचता हूँ कि अब मैं लौट चलूँ.”

बाघ इतना भौंचक्का रहा गया - अर्थात इतना हैरान हो गया-कि जब उसे झपटना चाहिए था -

वह ऊँट पर नहीं झपटा.

और बंदर ने अपना नारियल नहीं गिराया.

और गिलहरी ने बंदर की पूंछ को नहीं काटा.

और पक्षी ने गिलहरी के सिर पर हमला नहीं किया.

और उन सब ने एक ही पल में ऐसा कुछ भी नहीं किया जैसा उन्होंने करने का सोचा था.

कुछ समय के लिए किसी ने कुछ न कहा और एक आवाज़ भी सुनाई न दी.

फिर छोटा पक्षी खूब ज़ोर से हंसा और उसकी हंसी सारे जंगल में गूँज गई.

गिलहरी चीं-चीं करने लगी और बंदर प्रसन्नता से ऐसे उछल-कूद करने लगा कि जंगल के सारे प्राणी जाग गये और चिल्ला कर बोले, “क्या हुआ? क्या हुआ?”

लेकिन तुम जानते हो कि क्या हुआ था. कुछ भी नहीं हुआ था! सुंदर ऊँट बस घूम कर उसी रास्ते से वापस चला गया था जिस रास्ते से वह आया था. लज्जा से भरा बाघ घने अँधेरे जंगल में चुपचाप खिसक गया था. और आकाश में सूर्य चमकने लगा था.

समाप्त